



Silk Brijwasi

Exclusive designer collection...

Part. 01





जयति तेऽभिकं जन्मना वज्रं
प्रयत्न इन्द्रिया शशमसा हि ।
आयका-
विचित्रते



दयितं दुःखानां विना पापकानां
स्वायं प्रसादात्स्वस्ती विचित्रता



जगति ते जगित् जगतां हि
प्रजातं जगत्सर्वम् ॥
सर्वं जगत्सर्वं जगत्सर्वम् ॥



सर्वं जगत्सर्वं जगत्सर्वम् ॥
सर्वं जगत्सर्वं जगत्सर्वम् ॥





Silk Brijwasi

Exclusive designer collection...

Part. 01



D.NO. 3505

विशाली सौंदर्यालोकन

सुन्दर
सुसज्जित
सुसज्जित



D.NO. 3506

विशाली सौंदर्यालोकन
सुन्दर सुसज्जित
सुसज्जित सुसज्जित
सुसज्जित सुसज्जित



D.NO. 3504



D.NO. 3505



D.NO. 3506

गन्मसा लर
शाश्वदत्र ति
क्ष तावक
स्वो विनि



D.NO. 3502



शा इदाशये साधजातस-
त्ससिजोवस्त्रमिषा इया ।
सुरतनाथ ते ज्जुत्कादायिका
जह निम्नता न कि वध



कथंति ते
श्रमस
संपत्त इ
स्वयं प्रतापवस्त्रा विनिन्दत



